आया पावन भूमि पर
अपना परिवर्तन करने।
ज्ञान गुण और शक्तियों
से अपनी झोली भरने।
मन मेरा व्यर्थ संकल्पों
से था इतना भरा हुआ।
ज्ञान योग के पवित्र
जल से ये हरा भरा हुआ।
आकर इस भट्टी में
मौन का महत्व पता चला।
हर रोज मन मेरा
याद की धारा में बहता चला।
पाकर पवित्र आत्माओं का
संग टूटा देहभान।
भान हुआ मदद कर रहे
मुझको शिव भगवान।
बनूँगा मैं सम्पूर्ण पावन
जागा मन में विश्वास।
बनकर पावन करूँगा
पूरी बाबा की हर आस।
लाना है धरती पर स्वर्ग
अब ना मुझे सोना है।
सबके मन बुद्धि में अब
ज्ञान का बीज बोना है।

देना है चारों और
शिव बाबा यह का सन्देश।
आया है भगवान हमारा
लेकर साधारण वेश।
अब तो मुझको करनी है
घर चलने की तैयारी।
त्यागी मैंने हर चीज जो
लगती मुझको प्यारी।
मुझको नहीं करना है
अब और कुछ भी काम।
श्रेष्ठ कर्म से बाला करना है
शिव बाबा का नाम।

ओम शांति।